लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION

OF

4th

LOK SABHA DEBATES

[नवां सत्र
Ninth Session]

Preservation Unit
Fumigated
On 3.3.84
Parliament Library

[खंड 35 में अंक 21 से 29 तक हैं
Vol. XXXV contains Nos. 21 to 29]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

**LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI**

मूल्य : एक रुपया

Price : One Rupee

लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनुदित संस्करण

23 दिसम्बर, 1969 । 1 पौष, (1891 (शक)

पृष्ठ संख्या	शुद्धि
1	नीचे से पंक्ति 4-5, के बीच "श्री यशवंत सिंह कुशवाह" का नाम भी पढ़िये ।

विषय-सूची/CONTENTS

अंक 28, मंगलवार, 23 दिसम्बर, 1969/2 पौष, 1891 (शक)
No. 28 Tuesday, December 23, 1969/Pausa 2, 1891 (Saka)

विषय	Subject	पृष्ठ/Pages
निधन सम्बन्धी उल्लेख—	Obituary Reference—	
(श्री दी० चं० शर्मा का निधन)	(Death of Shri D. C. Sharma)	1—7
अध्यक्ष महोदय	Mr. Speaker	1—2
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	2
डा० राम सुभग सिंह	Dr. Ram Subhag Singh	2—3
श्री रंगा	Shri Ranga ..	3
श्री बलराज मधोक	Shri Bal Raj Madhok	3
श्री ही० ना० मुकर्जी	Shri H. N. Mukerjee	4
श्री उमा नाथ	Shri Umanath	4—5
श्री रवि राय	Shri Rabi Ray	5
श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी	Shri Surendranath Dwivedy	5
श्री सेझियान	Shri Sezhiyan	5
श्री रघुबीर सिंह शास्त्री	Shri Raghuvir Singh Shastri	6
श्री मुहम्मद इस्माइल	Shri Muhammad Ismail	6
श्री तेन्नेटि विश्वनाथम	Shri Tenneti Viswanatham	6
डा० कर्णी सिंह	Dr. Karni Singh ..	6
डा० वी० के० आर० वी० राव	Dr. V. K. R. V. Rao	6—7

लोक-सभा
LOK SABHA

मंगलवार, 23 दिसम्बर, 1969/2 पौष, 1891 (शक)
Tuesday, December 23, 1969/ Pausa 2, 1891 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई
The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[**अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए**
MR. SPEAKER *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

OBITUARY REFERENCE

श्री दी० चं० शर्मा का निधन

अध्यक्ष महोदय : मुझे श्री दीवान चन्द शर्मा के दुखद निधन के बारे में सभा को सूचित करना है। उनका 73 वर्ष की आयु में नई दिल्ली में आज प्रातः देहावसान हो गया।

श्री शर्मा पंजाब के गुरदासपुर निर्वाचन क्षेत्र से इस सभा के सदस्य थे। वह इस सभा के वरिष्ठतम सदस्यों में से थे और प्रथम लोक सभा से निरन्तर सदस्य चले आ रहे थे। उनकी इस सभा की 18 वर्ष की सदस्यता अवधि के दौरान वे प्राक्कलन समिति, लोक लेखा समिति, अधीनस्थ विधान सम्बन्धी समिति आदि सहित अनेक संसदीय समितियों के सदस्य रहे। वह 1967-68 में याचिका समिति के सभापति रहे।

वह एक बहुत अच्छे संसद विज्ञ थे और सभा की कार्यवाही में बहुत सक्रिय रूप से भाग लेते थे।

वह एक विख्यात शिक्षा शास्त्री थे और पंजाब विश्वविद्यालय से एक सिनेटर और इस विश्वविद्यालय के सदस्य के रूप में सम्बद्ध थे। वह एक विद्वान थे और उनकी बहुमुखी सफलतायें थीं। इस सभा के सदस्य के रूप में उनके विचार बहुत संतुलित थे और उनके विचारों से परिपक्वता प्रकट होती थी। उनका स्वास्थ्य काफी समय से ठीक नहीं चल रहा था और आज प्रातः विधाता ने उन्हें हमसे छीन लिया।

हमें इस मित्र के निधन का बहुत दुःख है और मुझे विश्वास है कि यह सभा संतप्त परिवार को हमारी संवेदना भेजने में मेरे साथ सम्मिलित होगी।

प्रधान मंत्री, वित्त मंत्री, अणुशक्ति मंत्री और योजना मंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) : श्रीमान्, मेरा हृदय इस दुःख से बहुत भारी है। आज एक पुराना, प्रतिष्ठित और आदरणीय सहयोगी हमें छोड़कर चला गया है। हस प्रोफेसर शर्मा के निधन पर गहन संवेदना प्रकट करते हैं। वह प्रथम आम चुनाव के बाद पहली बार इस सभा के सदस्य चुनकर आये। उनकी लोकप्रियता इस बात से ही प्रतीत हो जाती है कि वह उसके बाद लगातार लोक सभा के सदस्य चुने जाते रहे। वह काफी समय से बीमार थे परन्तु बीमारी के बावजूद वह इस सभा और देश में होने वाली घटनाओं की जानकारी रखते थे और वह मुझे अपने विचार लिखते रहते थे।

वह एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमुख कार्यकर्ता थे। पंजाब विश्वविद्यालय के अलावा वह अन्य विश्वविद्यालयों, शैक्षिक निकायों और संगठनों से भी सम्बद्ध थे। वह सामाजिक समस्याओं में भी गहन रुचि लेते थे और वे अविभाजित पंजाब में हरिजन सेवक संघ के प्रांतीय बोर्ड और अखिल भारतीय समाज सम्मेलन से निकट रूप से सम्बद्ध थे।

उन्होंने अनेक प्रकार की समस्याओं में अपनी विद्वता, समझबूझ और अनुभव से इस सभा की चर्चा को लाभान्वित किया।

प्रोफेसर शर्मा दृढ़प्रतिज्ञ थे और हमेशा उदारतापूर्वक बोलते थे। वह पिता तुल्य थे। हम उनके अधिकार और दृढ़ता का सम्मान करते थे जिसके कारण वह पुराने स्कूल मास्टर के नाते अक्सर मन्त्रियों और अन्य व्यक्तियों को प्रताड़ित कर देते थे।

प्रोफेसर शर्मा का निधन मेरे लिये एक व्यक्तिगत क्षति है क्योंकि मेरे पिता और मैं उनको बहुत वर्षों से जानते थे। बाद में वह मेरे पति के एक परम और अच्छे मित्र बने।

मैं अपनी ओर से और इस सभा की ओर से आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप स्वर्गीय प्रोफेसर शर्मा के परिवार के सदस्यों तक हमारा घोर दुःख और हार्दिक संवेदना पहुंचा दें।

डा० राम सुभग सिंह (बक्सर) : प्रोफेसर शर्मा एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और गण्यमान्य विद्वान थे। वह एक शरणार्थी थे और वह पश्चिम पाकिस्तान से आने वाले और पाकिस्तान जाने वाले शरणार्थियों को दुःख भरी कहानियां सुनाया करते थे।

प्रोफेसर शर्मा संसद के नये सदस्यों के वास्तविक मार्गदर्शक थे। जब कभी भी ये सदस्य कठिनाइयों से घिरे होते थे, वह उनकी सहायता करते थे और उन्हें सांत्वना देते थे।

वह केवल शिक्षक नहीं थे अपितु अंग्रेजी के महान विद्वान थे। वह काफी वर्ष तक अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन के सभापति रहे। वह प्राथमिक स्कूल शिक्षक संघ के सभापति थे और उन्होंने इस रूप में उनकी स्थिति को सुधारने में काफी योगदान किया यह उनके प्रयत्नों का ही परिणाम था कि इस देश के शिक्षक संगठित हो सके।

संसदीय वाद-विवाद में उनके अंशदान की प्रत्येक व्यक्ति सराहना करता था और उन्होंने अपनी अभिरुचि वाले विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस प्रकार से उन्होंने अपने विचारों से न केवल संसद को लाभान्वित किया अपितु देश की आम जनता को भी लाभान्वित किया।

मैं विरोधी पक्ष की ओर से उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं और आप से प्रार्थना करता हूं कि आप उनके परिवार तक दुःख की भावना पहुंचा दें।

श्री रंगा (श्री काकुलम) : माननीय साथियों के द्वारा यहां की गई विचारों की अभिव्यक्ति में मैं अपने को सम्मिलित करता हूं। मैं उन्हें काफी समय से एक शिक्षा शास्त्री के रूप में जानता था और वह इस सभा के गत 18 वर्षों में बहुत ईमानदार सदस्य और सक्रिय रूप से वाद-विवाद में भाग लेने वाले सिद्ध हुए। उन्होंने अपनी रुचि वाले वाद-विवाद में हमेशा हमारे साथ भाग लिया। परन्तु इसके साथ-साथ, जिन बातों पर हम उनसे सहमत नहीं होते थे, उन पर भी उनका विरोधी पक्ष के साथ अच्छा व्यवहार होता था। अनेक अवसरों पर उन्होंने मंत्रियों तक की भी भर्त्सना की और वे सभा कक्षों में हमसे कहा करते थे कि मंत्रियों को ठीक नहीं किया जा सकता क्योंकि वे अपने मंत्री पद से अभिभूत हैं। इसके बावजूद वह शासक दल के प्रतिनिष्ठावान रहे।

उन्होंने विभाजन के बाद पंजाब विश्वविद्यालय के मामले में काफी योगदान किया। उनका इस सभा में योगदान प्रशंसनीय है। वह सभा कक्षों और केन्द्रीय कक्ष में लगभग सभी सदस्यों के एक बहुत अच्छे मित्र और सलाहकार सिद्ध हुए। हमने उनके निधन से एक बहुत अच्छा मित्र और साथी खो दिया है। आपसे प्रार्थना है कि आप उनके संतप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दें।

Shri Bal Raj Madhok (South Delhi) : Mr. speaker, the cruel fate has snatched away one more member from us. The demise of Prof. D. C. Sharma is a personal loss to me. He was my teacher and used to teach us English. His behaviour was also a lesson for us. I am very much pained on the passing away of such an old and great politician.

Prof. Sharma was an eminent educationist. He was one of the builders of Punjab University. He was a member of its syndicate and Senate as well. He was a life-member of D. A. V. College. He was a great English scholar and he contributed much in social, cultural and political fields. He served as General Secretary of Punjab Hindu Maha Sabha for about 15 years. He played a great part in creating political consciousness and national awakening in Punjab.

He was an aged leader of Arya Samaj. He came to India as a refugee after partition of the country and joined Congress and served it for 18 years and through it served the nation. He was keeping indifferent health for the last few days. But in spite of it whenever he came to the House, he used to guide every.body by his bearing intelligence and humour. Being an aged teacher, it had become his habit to advise everybody.

The passing away of such a man at this time, when the Parliament needs such people who are politicians and intellectuals, is a great loss to Parliament and to the country.

On my own behalf and on behalf of my party. I offer my condolences to him.

श्री ही० ना० मुकर्जी (कलकत्ता उत्तर पूर्व) : श्री दी० चं० शर्मा का निधन हम सबके लिये एक गहरा धक्का है।

मैं श्री शर्मा से 1952 से परिचित था जब हम दोनों प्रथम लोक सभा के लिये निर्वाचित हुये थे। वह एक ऐसे साथी थे जिनके प्रशंसनीय व्यक्तिगत गुणों को आसानी से नहीं भुलाया जा सकता।

वह उस महान प्राचीन पीढ़ी से सम्बन्ध रखते थे जिस समय राष्ट्रीय एकता की भावना प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाती थी। मुझे याद है कि वह इस बात को बहुत गर्व के साथ कहा करते थे कि जब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त की थी, उस समय कलकत्ता विश्व-विद्यालय का क्षेत्राधिकार भारत के सुदूर पूर्व भागों से पेशावर तक था। वह कहा करते थे कि यह देश की एकता का प्रतीक था जिसको उन्होंने अपने कार्यों में लक्षित किया।

वह सभा की कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लेते थे और अपने मौलिक चुटकलों से कार्यवाही को रोचक बना देते थे। उनके साथ सभा में झड़प करने में भी आनन्द आता था।

उनका व्यक्तित्व, दूसरों को मनाने की सहज प्रवृत्ति और विचित्र आकर्षक गुण उनके चरित्र की विशेषतायें थीं जिनके कारण वे एक अद्भुत चरित्र वाले व्यक्ति थे। यद्यपि वे वृद्धावस्था में और सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के बाद मृत्यु को प्राप्त हुए हैं, फिर भी इस सभा में उनका अभाव बहुत खटकेगा।

वह कुछ दिन से अस्वस्थ थे। परन्तु वह जब भी सभा में आते थे, वह एक प्रकार का उल्लास पैदा कर देते थे।

हमें एक विख्यात शिक्षा शास्त्री, देश के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने वाले विशिष्ट व्यक्ति, एक शक्तिशाली संसद विज्ञ और चरित्रवान तथा शिष्टाचारयुक्त व्यक्ति के निधन का गहरा दुःख है। वह पूर्णतया एक सज्जन व्यक्ति थे। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप संतप्त परिवार को हमारी गहन संवेदना पहुंचा दें।

श्री उमानाथ (पुद्दुकोटै) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से प्रोफेसर दी० चं० शर्मा के दुखद निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं। वस्तुतः उनकी सज्जनता को व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। वह बहुत अनुभवी व्यक्ति थे और मुझ जैसे सदस्यों को सभा कक्ष में संसदीय प्रक्रिया और जीवन के बारे में कुछ बातें तथा शिक्षा दिया करते थे।

वह प्रश्न काल और वाद विवाद के दौरान बहुत गम्भीरता, विनोदप्रियता और तीक्ष्णता से काम लेते थे। वह एक प्रबल आत्मिक बल और इच्छा-शक्ति वाले व्यक्ति थे। बीमारी के दौरान भी, जबकि वह एक प्रकार से चलने के योग्य नहीं थे, वे दो या तीन बार सभा में आये थे। शारीरिक असमर्थता के बावजूद, उनको सभा में आने, और पुराने साथियों को देखने और वाद-विवाद में भाग लेने में काफी रुचि थी।

उनके निधन से इस सभा को भारी क्षति हुई है। यह मेरी और मेरे दल की व्यक्तिगत क्षति है। प्रधान मंत्री, आप तथा अन्य माननीय मित्रों के साथ मैं भी अपनी संवेदना प्रगट करता हूं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से उनके परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दें।

Shri Rabi Ray (Puri) : I was very well acquainted with Prof. D. C. Sharma for the last three years when I was elected as a memher to this House. He was a coordinator between the goodness of the past and the modern things of the day. He had great faith in socialistic traditions. He had a great liking for the teaching profession even during his last days. He was a man of great determination and resolute will. He used to take part almost on every issue from defence to putting restrictions on the exhibition of obscene pictures. We, the new Members who have been elected to the House in the last general elections, will never be able to forget his learning, wisdom and paternal affection. I associate myself and my party with the sentiments expressed by you and the Leader of the House and request you to convey our deep condolences to the bereaved faimly.

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा): प्रोफेसर दी० चं० शर्मा का निधन मेरे लिये व्यक्तिगत क्षति है। मैं उन्हें पिछले 16-17 वर्षों से जानता था और मेरी उनके साथ घनिष्ठता संयुक्त राज्य अमरीका गये संसदीय शिष्टमंडल के दौरान हुई जब हम वहां लगभग डेढ़ महीने रहे।

वस्तुत: उनकी इच्छा शक्ति बहुत प्रबल थी और मेरा विश्वास था कि वह इतनी शीघ्र काल का ग्रास नहीं बनेंगे। बीमारी के बावजूद वह संसद और अन्य राजनैतिक घटनाओं से अपने को अवगत रखते थे। वह राष्ट्रीय जीवन के समस्त पहलुओं में तीव्र रुचि रखते थे। काफी आयु के होने के बावजूद उनमें उत्साह और कार्य क्षमता का अभाव न था। मैं कहना चाहूंगा कि मैंने आज तक इतनी आयु वाले किसी भी व्यक्ति को हमारी समस्त समस्याओं के प्रति इतने अधिक प्रगतिशील विचारों वाला नहीं पाया। उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण उनके निकट सम्पर्क में आना सौभाग्य की बात थी। वह सौहार्दपूर्ण, विनोदप्रिय, मैत्रीपूर्ण, मिलनसार व्यक्ति थे, और उनका सब लोग आदर करते थे। हमने एक महान संसद विज्ञ, शिक्षा शास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता खो दिया है। यह इस सभा और राष्ट्र को भारी क्षति है। मैं आशा करता हूं कि संतप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा देंगे।

श्री सेझियान (कुम्बकोणम) : मैं इस सभा में व्यक्त की गई भावनाओं से अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। प्रोफेफर होने के नाते वह इस सभा में चर्चा को शैक्षिक रूप दे दिया करते थे। वह वाद-विवाद और प्रश्न काल में तीव्र रुचि लेते थे और कांग्रेस दल का होने के बावजूद उनके विचार विरोधी पक्ष से बहुत मिलते थे।

जब मैं 1962 में इस सभा में आया, तो वह हमें हमारे काम में काफी उत्साह और जोश प्रदान करते थे। उनका समस्त युवक संसद-सदस्यों के प्रति पिता-तुल्य स्नेह था और वे हमारा मार्ग-दर्शन करते थे ताकि हम इस सभा में शिष्टता और गंभीरता के साथ चर्चा में भाग लें। वह अपने चुटकलों और विनोदप्रियता से सभा की कार्यवाही में जान डाल देते थे।

Shri Raghuvir Singh Shastri (Baghpat) : Sir, I was acquainted with Shri D. C. Sharma when I was a student of 13-14 years of age. He was a teacher at Lahore. He made valuable contribution in the propagation of Arya Samaj education in Punjab. He made historical contribution in the building and development of Punjab University, He always used to call me with the same affection which a teacher has for his student. His demise is a great loss to this House as also to Punjab. A political thinker of a very high standard has passed away. On my behalf and on behalf of my party, I offer my condolences to the great soul.

Shri Yashwant Singh Kushwah (Bhind) : Mr. Speaker, Prof. D. C. Sharma was an eminent leader of Arya Samaj, a distinguished educationist and a great parliamentarian. His demise is a great loss to the nation. I and the other members of my party are greatly distressed on the passing away of such a great soul and request you to convey our condolences to his bereaved family.

श्री मुहम्मद इस्माइल (मंजेरी) : मैं श्री दीवान चंद शर्मा के निधन पर इस सभा में व्यक्त की गई भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं । मेरा उनके साथ इतना अधिक निकट का सम्पर्क नहीं था जितना कि अन्य सदस्यों का था । परन्तु उनके साथ थोड़े से परिचय से ही मैं इस बात को जान गया था कि वह एक अद्‌भुत चरित्र वाले व्यक्ति थे । यद्यपि वह बहुत गम्भीर स्वभाव वाले व्यक्ति थे परन्तु उनमें हास परिहास तथा विनोदप्रियत्व का अभाव नहीं था ।

संसद में जितना योगदान उनका था, उतना यहां शायद ही किसी का हो । वह अत्यधिक परिश्रमी व्यक्ति थे और उन्होंने इस सभा में अनेक विधेयक प्रस्तुत किये और अनेक विषयों में भाग लिया । उनकी शारीरिक अवस्था को देखते हुए उनका इतना अधिक परिश्रम एक चमत्कार था । मैं अपने को और अपने दल को इस सभा में अर्पित की गई श्रद्धांजलि से सम्बद्ध करता हूं ।

श्री तेन्नेटि विश्वनाथम् (विशाखापत्तनम) : मैं स्वर्गीय श्री दीवान चंद शर्मा के बारे में व्यक्त की गई भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं । वह एक चरित्रवान व्यक्ति थे । वह एक बहुत अच्छे संसद विज्ञ और शिक्षा शास्त्री थे । वह अपने ज्ञान से संतुष्ट नहीं होते थे । वह सभा में जब कभी भी कोई काम की बात सुनते थे, वह उसे तत्काल अपनी नोट-बुक में लिख लेते थे । वह वस्तुतः एक महान विद्वान थे । उनका निधन मुझ जैसे व्यक्ति के लिये एक व्यक्तिगत क्षति है । मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को हमारी संवेदना पहुंचा दें ।

डा० कर्णी सिंह (बीकानेर) : मैं माननीय सदस्य श्री दी० चं० शर्मा के निधन पर इस सभा में व्यक्त किये गये विचारों से अपने को सम्बद्ध करता हूं । मैं प्रोफेसर साहब से काफी वर्षों से परिचित था और मुझे उनके निधन का हार्दिक दुःख है क्योंकि वह नये संसद सदस्यों के प्रति बहुत सौहार्दपूर्ण थे और जब भी ये सदस्य उनके पास जाते थे, तो वह उनका मार्गदर्शन करते थे और सभा की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते थे । वह एक महान शिक्षा शास्त्री और विद्वान व्यक्ति थे । मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप उनके शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को हमारी संवेदना पहुंचा दें ।

शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री (डा० वी० के० आर० वी० राव) : मैं स्वर्गीय प्रोफेसर दीवान चंद शर्मा से 15 वर्ष से अधिक समय से परिचित था और मैंने उनके साथ अनेक सम्मेलनों

में भाग लिया था। उन्होंने अखिल भारतीय शिक्षा संस्था संघ का गठन किया और अनेक वर्षों तक इसका नेतृत्व किया। उन्होंने न केवल विश्वविद्यालय शिक्षा में अपितु माध्यमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा में भी काफी रुचि ली। वह केवल एक शिक्षा शास्त्री न थे अपितु शिक्षकों के अधिकारों के एक प्रबल समर्थक भी थे। वह जीवन पर्यन्त शिक्षकों की स्थिति में सुधार कराने के लिये संघर्ष करते रहे। एक शिक्षक और शिक्षा मंत्री के नाते और देश के 20 लाख शिक्षकों की ओर से मैं प्रोफेसर शर्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके निधन पर इस सभा में व्यक्त की गई भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय सदस्य अपना शोक व्यक्त करने के लिये कुछ समय के लिये कृपया मौन खड़े रहें।

इसके पश्चात् सदस्य कुछ समय के लिये मौन खड़े रहे

The Members then stood in silence for a short while

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के सम्मान में सभा को स्थगित करने से पहले मैं विभिन्न दलों के नेताओं से प्रार्थना करूंगा कि वे उसके बाद तत्काल मेरे कक्ष में मुझसे मिलें। हमने शाम 4 बजे जो बैठक निश्चित की थी, वह अब तत्काल होगी। कार्य मंत्रणा समिति के सदस्य भी तत्काल मेरे कक्ष में आने की कृपा करें।

अब सभा कल 11 बजे तक के लिये स्थगित होती है।

इसके पश्चात् लोक सभा बुधवार, 24 दिसम्बर, 1969/3 पौष, 1891 शक के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, December 24, 1969/Pausa 3, 1891 (Saka).

Tej Kumar Press, Lucknow. 21-3-70—340.